COMBINED ISSUE

ISSN: 2229-5771

SAMĀNUBHŪTI

INTERNATIONAL PEER-REVIEWED RESEARCH JOURNAL

VOLUME: VI NUMBER: X & XI, BI-ANNUAL: JAN-JUNE & JULY-DEC, 2015.

JAGADGURU RAMBHADRACHARYA HANDICAPPED UNIVERSITY
CHITRAKOOT, UTTAR PRADESH-210204

PHONE: 05198-224481, FAX: 05198-224293, WEB: WWW.JRHU.COM

ABOUT THE CHANCELLOR

Padambibhushan Jagadguru Rambhadracharya Ji, the life-chancellor of Jagadguru Rambhadracharya Handicapped University Chitrakoot U.P (India), was born in 1950 at Jaunpur, Uttar Pradesh, India. Swami Ji completed his Bachelor & Master Degree in Saskrit from Sampurnanand Sanskrit University, Varansi, U.P (India). He was awarded Ph.D for his illustrious work on Panini, a great grammarian of Sanskrit Language. He travelled widely across the nations to propagate Indian Culture and religion. He visited USA, Canada, England, Singapore, Mauritius, Indonesia, Fizi, Guyana etc. He was invited to speak in world peace summit at UNO. New York in the year 2000, Brilliant writer, author, extempore orator, composer and authority on Sanskrit Panini Grammer, Swami Ji's landmark contributions in the field of literature were recognized by Sahitya Academy Award of 2005 for his Mahakavya Bhargav Raghveeyam composed in Sanskrit language. He has also received President Award Maharshi Badrayan Purushkar of the year 2004.

COMBINED ISSUE

ISSN: 2229-5771

SAMĀNUBHŪTI

INTERNATIONAL PEER-REVIEWED RESEARCH JOURNAL

VOLUME: VI NUMBER: X & XI, BI-ANNUAL: JAN-JUNE & JULY-DEC, 2015.

JAGADGURU RAMBHADRACHARYA HANDICAPPED UNIVERSITY
CHITRAKOOT, UTTAR PRADESH-210204

PHONE: 05198-224481, FAX: 05198-224293, WEB: WWW.JRHU.COM

Editorial Advisory Board

Parton : Prof. Yogesh Chandra Dubey

Advisory Board:

1. Prof. S.R.Singh Sengar
2. Sri R.P. Mishra

Chief Editor

Prof. Kamta Prasad Tripathi

Managing Editor:

Prof. Girija Prasad Dubey

Editor:

Dr. Mahendra kumar Upadhyay

Co-Editor

1. Sri Nihar Ranjan Mishra
2. Dr. Vinod kumar Mishra

Asst. Editor

Dr. Sanjay kumar Nayak

Editorial Board

1. Dr. Kiran Tripathi
2. Dr. Punam Pandey
3. Dr. Amita Tripathi
4. Dr. Rakesh kumar Tiwari
5. Sri Amit Agnihotri
6. Dr. Gulab Dhar
7. Dr. Pratima kumari Shukla
8. Sri Durgesh Mishra
9. Dr. M.D.Singh
10. Sri Daleep kumar

Editorial Office:

Research Publication Unit, J.R.H. University, Chitrakoot,
Uttar Pradesh-210204, India
www.jrhu.com, email: samanubhutijrhu@gmail.com

Views expressed in the research paper/article/book review are individual's opinion of the concerned author only.

lekuHkfr%

vudo.k'kk/ki.kki"lklkjHkkfUork]
leh{kdkfyoUne t x t ukfHkufUnrkA
euhUnekU;jkeHknnf'kdkudEi;k]
lekuHkfr#Rlo ruk r 'ke"kh t "kkeAA

विविध वर्णी
षोधपत्र–रूपी
पुष्पों के
सौरभ से
समन्वित
समीक्षकरूपी मधुपवृन्द
के गुंजन से
अभिनन्दित
मुनीन्दवृन्द–वन्द्य
जगद्गुरु श्रीरामभद्राचार्य की
अनुकम्पा से
यह (अन्ताराष्ट्रिय) समानुभूति षोधपत्रिका
मनीषिवृन्द के
आनन्दोत्सव
का
विस्तार करे।

lekuHkkfrekUuu: loHkknfooftr%A
i';u cºee;a lo± l[k cU/kkr~ iePr;rAA
&txnx# Jh jkeHknkpk;%

सभी प्रकार के भेदो से रहित

समानुभूति से युक्त मनुष्य

(सर्वत्र) सब को ब्रह्ममय

देखता हुआ, सुखपूर्वक

बन्धन से मुक्त हो जाता है

lEikndh;

m"ko e t gkfluh txRrekfoukf'kuh
leRojf'edkf'kuh eu";rkfodkfluh
lfjr lexf'kfYiuho flf}nk ;'kfLouh
lekuHkfr:ftrk pdkLr fo'oHkr;

अत्यन्त आह्लाद का विषय है कि जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विष्वविद्यालय चित्रकूट की अन्ताराष्ट्रिय अर्द्धवार्षिक षोधपत्रिका समानुभूति का षष्ठवर्षीय दषम एवं एकादष संयुक्तांक प्रकाषित होकर अपनी प्रज्ञान–रष्मियाँ दिग्–दिगन्त में बिखेरने के लिए लालायित है।

विष्व के अप्रतिम मनीषी धर्मचक्रवर्ती, यषभारती, पद्मविभूषण एवं विद्यावाचस्पति आदि अनेक गौरवास्पद सम्मानो से मण्डित महाकवि महनीय मनस्वी अपूर्व तपस्वी परम यषस्वी निसर्ग सिद्ध महाकवि विष्ववन्द्य जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य श्री रामभद्राचार्य जी के विकलांगजनो के प्रति सहज एवम् परिणाममूलक अनुराग तथा निष्कम्प सत्संकल्प से चित्रकूट की पावन वसुन्धरा पर विष्व का प्रथम विकलांग विष्वविद्यालय 26 जुलाई 2001 की पुण्यवेला में अभ्युदित हुआ। सौभाग्यतः मनीषि–मूर्धन्य महात्मा स्वामी रामभद्राचार्य जी ही इस विष्वविद्यालय के विधिसम्मत जीवनपर्यन्त कुलाधिपति हैं। उनकी निर्व्याज अनुकम्पा एवम् अचिन्त्य अध्यवसाय से ही सम्प्रति यह षोडषवर्षकल्प विष्वविद्यालय अपने कल्पनातीत विकास से सुखद आष्चर्य की सृष्टि कर रहा है।

भारतीय संस्कृति की सर्वसौख्यदा चिरन्तनी चिन्तनधारा के अनुरूप मानवता के पल्लवन में उच्चषिक्षा प्राप्त सर्वथा सुयोग्य विकलांगजनो की गरिमामायी सहभागिता हो, मूलतः यही इस विष्वविद्यालय का लक्ष्य है। दिव्यांगो के अन्तर्निहित दिव्य गुणों के समुचित विकास हेतु इस पावन संस्थान में समस्त समीहित सुविधाएं एवम् आधुनिक यन्त्रादि विद्यमान है। इस विष्वविद्यालय के उद्देष्यों की अनुगामिनी यह षोधपत्रिका समानभूति भी है।

जगद्गुरुदेव को विकलांगो में परमेष्वर की स्पष्ट छवि दिखाई पडती है। उनका विचार है कि विकलांगो के प्रति सहानुभूति नही अपितु समानुभूति अपेक्षित है। सकलांगो की समानुभूति तब सफल मानी जाएगी जब विकलांगो में दैन्यभाव के निराकरण के साथ ही समानुभूति की भावना दृढ होगी। इन्हीं विचारो को दृष्टि में रख कर गुरुदेव ने विकलांग विष्वविद्यालय की षोधपत्रिका को समानुभूति की अभिधा से मण्डित किया है।

वस्तुतः विष्वविद्यालय भूतल के कल्पतरु हैं जिनमें ज्ञान–विज्ञान की अनन्त षाखाएं पल्लवित एवं पुष्पित होकर अभीष्ट फल प्रदान करती हैं। विष्वविद्यालय के अनुष्ठेय कृत्यों में उच्चषिक्षा के साथ उत्कृष्ट अनुसन्धान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अनुसन्धान की महत्ता सर्वविदित है। अद्यतन आष्चर्यचकित कर देने वाला वैज्ञानिक चमत्कार सतत अनुसन्धान का ही परिणाम है। षोध से ही नवीन बोध की उपलब्धि होती है। ग्राह्य एवं त्याज्य, कार्य एवम् अकार्य तथा सत् एवम् असत् आदि के निर्धारण में प्रमाणपरिपुष्ट षोध की गौरवमयी भूमिका होती है। सम्प्रति भौतिक दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध अद्यतन विष्वमानव नितान्त अषान्त एवं भयाक्रान्त क्यों हैं? यह भी अनुसन्धेय है।

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः की उदात्त भावना के साथ वसुधैव कुटुम्बकम् की वास्तविकता को दृढता प्रदान करके 'चरैवेति–चरैवेति' इस मन्त्र के मर्म को आत्मसात् करते हुए 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की मंगलमयी संकल्पना को साकार करने के लिए आधुनिक विज्ञान का समुचित सहयोग आवष्यक है– इस दृष्टि से भी चिन्तन, अध्यवसाय एवं षोध को आगे बढाना लाभप्रद होगा। 'समानुभूति' पूर्वोपन्यस्त समस्त उदात्त विचारों की पृष्ठभूमि पर मानवता के पल्लवन हेतु कृतसंकल्प है।

ज्ञान–विज्ञान का आकाष अनन्त है। आज विषिष्ट ज्ञान की दृष्टिसापेक्ष होने वाली अद्‌भुत उपलब्धि के पष्चात् भी बहुत कुछ जानना अवषिष्ट है। अतः निरन्तर अनुसन्धान एवम् उसके प्रचार–प्रसार हेतु षोधपत्रिकाओं के प्रकाषन की उपादेयता सदैव बनी रहेगी। मूलतः विकलांगजनो को समुचित षिक्षा प्रदान करके राष्ट्र एवं विष्व की समानधारा से जोड़ना सामयिक आवष्यकता है। उपरिचर्चित महनीय उद्‌देष्यो के साथ ही समष्टिहित में विमर्षषील मनीषियो के चिन्तन को वांछित विस्तार मिले यह इस समानुभूति षोधपत्रिका का मूल लक्ष्य है।

प्रस्तुत अंक में कुल एकतीस मनीषियो एवम् अध्येताओं का षोधजन्य चिन्तन समाहित है। यद्यपि वांछित लाभ हेतु समस्त लेखों का सम्यग् अनुषीलन ही अपेक्षित है तथापि प्रसंगतः जिज्ञासु पाठको के ध्यानाकर्षण की दृष्टि से इस अंक में संगृहीत षोधलेखों की संक्षिप्त चर्चा की जा रही है।

डॉ0 प्रज्ञा मिश्रा ने 'भारतीय संस्कृति एवं नारी' इस आलेख के अंर्तगत नारी की महिमा का सोद्धरण पर्यालोचन किया है। नारी के मातृत्व की महत्ता का निरूपण, आदर्ष नारियो में अनसूया, सीता एवं सावित्री के वैषिष्ट्य का समीक्षण और जीजाबाई, मीराबाई, चेन्नमा, दुर्गावती तथा महारानी लक्ष्मीबाई के साहस एवं षौर्य का स्मरण किया है।

डॉ0 कुसुम सिंह द्वारा लिखित आलेख 'प्रखर स्त्रीवादी लेखिका प्रभा खेतान की सृजनदृष्टि' में प्रभा जी की सृजनदृष्टि समीक्षित है। प्रभा जी को स्त्री की अस्मिता का यथार्थ बोध था। उन्होनें परिवारिक परम्परा, परिवेषजन्य अनुभूति, यथार्थबोध एवं चिन्तनषीलता से उपजी सृजनदृष्टि के बूते पर सदा से ही लीक से हटकर अपना मार्ग स्वंय बनाया।

डॉ0 महेन्द्र कुमार उपाध्याय एवं षिवप्रेम याज्ञिक ने चित्रकूट का ऐतिहासिक सर्वेक्षण एवं जनपद में पर्यटन की सम्भावनाओं पर उपयोगी विमर्ष प्रस्तुत किया है। डॉ0 किरण त्रिपाठी का आलेख 'हिन्दी साहित्य में सौन्दर्य और प्रेम' पर केन्द्रित है। सौन्दर्य और प्रेम की ज्ञात परिभाषाओं के आधार पर किया गया नवीन चिन्तन ष्लाघ्य है। डॉ0 आदित्यनाथ का अध्ययन 'बौद्ध ग्रन्थों में रामचरित की अवधारणा पर आधृत है। आलेख के माध्यम से रामकथा की विविधता एवं व्यापकता का बोध सहजता से किया जा सकता है।

श्री विष्वेष दुबे के आलेख में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता पर्यालोचित है। लेखकद्वय डॉ0 प्रमिला मिश्रा एवं सूर्य प्रकाष मिश्र के आलेख में उपनिषदो का षिक्षा दर्षन विवेचित है। श्री दुर्गेष कुमार मिश्र ने 'बौद्धकालीन षिक्षा प्रणाली के आधुनिक षिक्षा प्रणाली में ग्रहणीय तत्व' इस आलेख के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि आधुनिक षिक्षा प्रणाली में बौद्धकालीन षिक्षा प्रणाली बहुषः व्यवहृत है।

डॉ0 षांत कुमार चतुर्वेदी ने 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल और हजारी प्रसाद का मत' के माध्यम से अवगत कराया है कि आचार्य रामचन्द्र षुक्ल के मन्तव्यों के पुनरीक्षण का साहस आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी में था। डॉ0 अरबिन्द कुमार ने गाँवों के विकास में मनरेगा की सहभागिता का तथ्यपरक एवम् उपयोगी समीक्षण किया है। डॉ0 ओमलता ने 'संगीत चिकित्सा में तालों की अवधारणा' के अर्न्तगत यह सिद्व करने का प्रयत्न किया है कि सधे हुए विविध तालों के प्रयोग से अनेक रोगो का उपचार किया जा सकता है।

डॉ0 संग्राम सिंह ने 'स्वर्णिम भारत के विकास में महात्मा ज्योतिबा फुले के षैक्षिक योगदान का निरूपण किया है। डॉ0 रामप्यारे विष्वकर्मा द्वारा लिखित 'कालिदास के लोकधर्मी चिन्तन में व्यंजना के अन्तर्गत कालिदास की कतिपय सूक्ष्म व्यंजनाएं विवेचित है। श्री प्रषांत मिश्र ने स्वतंत्रता आंदोलन में बालगंगाधर तिलक की महत्त्वपूर्ण भूमिका को उजागर किया है। डॉ0 भगवानदीन एवं डॉ0 नरेष कुमार कटियार ने कानपुर के कुछ महाविद्यालयों के वैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा स्ववित्त पोषित महाविद्यालयो के षिक्षक–षिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

श्री अवधनारायण ने 'अजन्ता के भित्तिचित्रों में अंकित परिधानो का अनुषीलन' इस आलेख में तत्कालीन राजकुल, सेवक, सैनिक, नर्तक–नर्तकी एवं आखेटक आदि के परिधानों का पृथक्–पृथक् निरूपण

किया है। डॉ0 बद्रीनारायण मिश्र ने श्रीमद्भागवतपुराण में प्रयुक्त अलंकार, गुण, रीति,रस, और ध्वनि आदि काव्यषास्त्रीय तत्वों के आधार पर उक्त पुराण से होने वाले सौन्दर्य–बोध का अनुषीलन किया है।

श्री षरद कुमार सिंह ने अष्टावक्र महाकाव्य के आधार पर अष्टावक्र की चारित्रिक विषेषताओं का विवेचन किया है। डॉ0 षालिनी षुक्ला के षोधलेख में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासियों की भूमिका विवेचित है। श्री लक्ष्मण सिंह का आलेख पुराणों मं विवेच्य वाणिज्य एवं व्यापार पर क्रेन्द्रित है। सुश्री षिखा त्रिपाठी ने अपने आलेख में आदिवासी समाज की परम्पराओं एवं रूढियों का समीक्षण किया है।

इसके बाद आंग्ल भाषा में लिखित दस लेखों के प्रमुख बिन्दुओं पर दृष्टिपात किया जा रहा है–

डॉ0 पूनम पाण्डेय ने अपने आलेख **EXAMINATION OF HUMAN RELATIONSHIP IN SHASHI DESHPANDE' S *A MATTER OF TIME'*** के अन्तर्गत षषि देष पाण्डेय के सुप्रसिद्व उपन्यास 'ए मैटर आफ टाइम' में चित्रित मानवीय सम्बन्धों पर अनेक दार्षनिक सिद्वान्तों के परिप्रेक्ष्य में प्रकाष डाला है और उपन्यास में चर्चित पात्रों की मानवीय संवेदनाओं से पाठकों को अवगत कराने का प्रयास किया है।

डॉ0 अमिता त्रिपाठी द्वारा लिखित **TEACHING AND EXAMINATION FOR STUDENTS WITH VISUAL IMPAIRMENTS'** इस आलेख में दृष्टिबाधितों के षिक्षण और मूल्यांकन में आने वाली समस्याओं पर प्रकाष डाला गया है और उनके निराकरण हेतु नई पद्धतियों एवं नीतियों के निर्माण की आवष्यकता निरूपित की गयी है।

डॉ0 संजय कुमार नायक ने अपने आलेख **EFFECTS OF VIOLENCE AGAINST WOMEN ON THEIR MENTAL HEALTH'** के अन्तर्गत सम्प्रति महिलाओं के साथ हो रहे अनेकविध दुर्व्यवहारों एवं हिंसात्मक कृत्यों के कारण उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वालो कुप्रभावों का नितान्त कुषलता के साथ निरूपण किया है।

डॉ0 षषिकांत त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत **ASTROLOGICAL SURVEY OF OUR UNIVERSE'** आलेख में सम्पूर्ण सृष्टि के ज्योतिषीय सर्वेक्षण की व्याख्या है, और विभिन्न लोको का वर्णन भी ज्ञानवर्धक है।

डॉ0 रीना पाण्डेय ने अपने षोधलेख **NEED AND RELEVANCE OF INCLUSIVE EDUCATION'** के अन्तर्गत समावेषी षिक्षा की आवष्यकता एवं प्रासंगिकता पर प्रकाष डालते हुए यह मन्तव्य व्यक्त किया है कि सम्प्रति सामान्य एवं विषिष्ट बालको को समान पर्यावरण में समावेषी षिक्षा प्रदान करके उनकी विसंगतियों का निराकरण किया जा सकता है और उन्हें एक समान मुख्यधारा से जोड़ा जा सकता है।

डॉ0 कुमार प्रद्योत दुबे ने **Enhanced AODV Protocol for Mobile Ad-hoc Networks** इस आलेख के माध्यम से मोबाइल एडहाक नेटवर्क की सुरक्षा से सम्बद्ध विभिन्न बिन्दुओं का विवेचन किया है और उससे उत्पन्न होने वाले दुष्प्रभाव से बचने के उपायों की भी चर्चा की है।

श्री सतीष कुमार मिश्र के षोधलेख **DEVELOPMENT OF RURAL REGION THROUGH VILLAGE KNOWLEDGE CENTRES** में चित्रकूट जनपद के विलेज नालेज सेन्टर (वी0केएस0) पर अभीष्ट प्रकाष डाला गया है। गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी एवं सूखे की समस्याओं से सन्तप्त ग्रामीण क्षेत्रों को सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़ने की विधियों एवं उनके विभिन्न सोपानो से अवगत कराने का भी प्रयास किया गया है।

डॉ0 रजुला एलबर्ट द्वारा प्रस्तुत आलेख **ROLE OF COMMUNICATION IN THE IMPROVEMENT OF PERSONALITY'** के अन्तर्गत व्यक्तित्व के निर्माण में संवाद की भूमिका का उल्लेख किया गया है। इस तथ्य को भी स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि संवाद कौषल से बहुषः बहुधा वांछित व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है।

डॉ0 राकेष रोषन सिंह एवं डॉ0 नीलम सोनी ने अपने आलेख **DIVERSITY AND TOLERATION: AN INVESTIGATION IN MODERN TIMES'** के माध्यम से वर्तमान समय की विविधता

एवं सहिष्णुता का समीक्षण किया है। आलेख का सारांष है कि उपयोगितावादी समाज में विविधताओं के मध्य भी सहिष्णुता द्वारा जीवन क्षेत्र का विस्तार किया जा सकता है।

श्रीमती उषा छिल्लर के आलेख **Mobile- Commerce & New trends in M Commerce Industry'** में वर्तमान समय में बहुप्रचलित मोबाइल कामर्स एवं एम0 उद्योग के क्षेत्र में आने वाले नये–नये प्रचलनों की उपयोगी समीक्षा की गयी है।

इस प्रकार इस अंक में संकलितषोधलेखों के अतिसंक्षिप्त समीक्षण के पष्चात् धन्यवाद के क्रम में प्रथमतः त्रिभुवन–मनोहारी कलिकलुषापहारी चित्रकूटविहारी दीनबंधु सौख्यसिन्धु सबन्धु सीतोपासित भगवान् राघवेन्द्र के चरणाम्बुजों में प्रणामांजलि निवेदित करता हूँ। चित्रकूट मंदाकिनी एवं कामदगिरि के वन्दन के साथ परमपूज्य महर्षि वाल्मीकि एवं महर्षि अत्रि आदि महात्माओं एवम् उनकी पावन परम्परा का सानुराग वन्दन करता हूँ। भगवती सरस्वती जिनका आश्रय पाकर स्वयं धन्य हो उठी है, जिन्हें विकलांगजनो में परमेष्वर की छवि दिखाई पडती है। अनेक अलंकरण एवं विविध सम्मान जिन्हें पाकर स्वयं अलंकृत एवं सम्मानित हो उठते हैं, जिनकी संवदेनषीलता एवं संकल्पषक्ति से यह विष्व का प्रथम विकलांग विष्वविद्यालय संस्थापित, व्यवस्थित एवं अपने उद्देष्यों के अनुरूप विकसित हो रहा है। अनेक ग्रन्थों में भी जिनके गुणो एवं धार्मिक, सामाजिक एवं साहित्यिक अवदानो को समाहित कर पाना दुष्कर है, ऐसे अपूर्व मेधासम्पन्न महात्मा जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी के चरणाम्बुजो में धन्यवाद स्वरूप नमनांजलि अभ्यर्पित करता हूँ। इस विष्वविद्यालय की परिकल्पना संस्थापना एवं संचालन में जिनकी महीयसी भूमिका रही है– ऐसी माननीया डॉ0 गीता देवी (बुआ जी) के प्रति धन्यवाद के षब्द स्वयं व्यक्त हो उठते है। विष्वविद्यालय के विद्वान् कुलपति, कवि एवं लब्धप्रतिष्ठ समीक्षक जागरूक प्रषासक प्रो0 योगेष चन्द्र दुबे के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। प्रसिद्ध समाजषास्त्री एवं कुषल प्रषासक वि0वि0 के यषस्वी कुलसचिव प्रो0 डॉ0 गिरिजा प्रसाद दुबे, विष्वविद्यालय की आर्थिक स्थिति को दृढ़ता प्रदान करने वाले मनीषी माननीय वित्त अधिकारी श्री रमापति मिश्र, प्रख्यात षिक्षाषास्त्री एवं सुयोग्य प्रषासक प्रो0 डॉ0 षिवराज सिंह सेंगर आदि विष्वव़िद्यालय के कर्णधारो के प्रति बहुषः धन्यवाद। समानुभूति के सम्पादक डॉ0 महेन्द्र कुमार उपाध्याय, संयुक्त सम्पादक श्री निहार रंजन मिश्र एवं श्री विनोद कुमार मिश्र, सहसम्पादक डॉ0 संजय कुमार नायक तथा सम्पादक मण्डल के सदस्यगण के प्रति भूरिषः धन्यवाद विद्योतित है। पत्रिका के अभीष्ट वर्ण–संयोजन हेतु श्री गौरव श्रीवास्तव के प्रति स्वरित मिश्रित साधुवाद। प्रस्तुत अंक जिन मान्य विमर्षषील लेखकों के आलेख प्रकाषित हैं तथा षोधपत्रिका की निष्पन्नता में जिनका किसी भी रूप में सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सभी आत्मीयजनों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करना मै अपना कर्तव्य समझता हूँ।

अंत में समानुभूति के माध्यम से अभीष्ट ज्ञान–विज्ञान की अविच्छिन्न धारा समत्व से समलंकृत मानवता को पुष्टि प्रदान करती रहे, इसी भावना से भावित अधस्तनी छान्दसी अभिव्यक्ति के साथ आनुषंगिक कथ्य को विश्रान्ति प्रदान करता हूँ।

ykd};kHkh"VQyizlfr%]
lktU;eUnkjyrkfoHkfr%A
Hk;kn'k"kkxfoHkf"krkuk]
fn0;kxoUn"k lekuqHkfr%AA

ik0 dkerkizlknf=ikBh ¼ih;w"k½

CONTENTS

Sr.No	Topic	Author	Page No.
1	भारतीय संस्कृति एवं नारी	डॉ0 प्रज्ञा मिश्रा	1-6
2	प्रखर स्त्रीवादी लेखिका प्रभा खेतान की सृजन–दृष्टि	डॉ0 कुसुम सिंह एवं शकीला बानो	7-12
3	चित्रकूट का ऐतिहासिक सर्वेक्षण एवं जनपद में पर्यटन की सम्भावनाएँ	डॉ0 महेन्द्र कुमार उपाध्याय एवं षिवप्रेम याज्ञिक	13-18
4	हिन्दी साहित्य में प्रेम और सौन्दर्य	डॉ0 किरण त्रिपाठी	19-21
5	बौद्ध ग्रन्थों में रामचरित्र की अवधारणा	डॉ0 आदित्यनाथ	22-28
6	माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन	विश्वेश दुबे	29-31
7	उपनिषदों का शिक्षा दर्शन	डॉ0 प्रमिला मिश्रा एवं सूर्य प्रकाष मिश्र	32-36
8	बौद्वकालीन षिक्षा प्रणाली का आधुनिक षिक्षा प्रणाली में ग्रहणीय तत्त्व	दुर्गेष कुमार मिश्र	37-39
9	हिन्दी साहित्य का आदिकाल	डॉ0 शान्त कुमार चतुर्वेदी	40-43
10	गाँवों केविकास में मनरेगा की सहभागिता	डॉ0 अरबिन्द कुमार	44-48
11	संगीत चिकित्सा में तालों की अवधारणा	डॉ ओमलता	49-50
12	स्वर्णिम भारत के विकास में महात्मा ज्योतिबा फुले के शैक्षिक चिन्तन का योगदान	डॉ0 संग्राम सिंह	51-53
13	कालिदास के लोकधर्मी चिन्तन में व्यंजना	डॉ0 राम प्यारे विष्वकर्मा	54-57
14	भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में बाल गंगाधर तिलक की भूमिकाः एक अध्ययन	प्रशांत मिश्रा	58-61
15	''स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ0 नरेश कुमार कटियार एवं डॉ0 भगवान दीन	62-65
16	अजंता के भित्तिचित्रों में अंकित परिधानों का अनुशीलन	अवध नारायण	66-72
17	श्रीमद्भागवत्महापुराण का सौन्दर्य बोध	डॉ0 बद्री नारायण मिश्र	73-77
18	''अष्टावक्र महाकाव्य में'' (अष्टावक्र का चारित्रिक विश्लेषण)	शरद कुमार सिंह	78-81
19	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं आदिवासियों की भूमिका	डॉ0 शालिनी शुक्ला	82-84
20	पुराणों में विवेच्य वाणिज्य एवं व्यापार	लक्ष्मण सिंह	85-88

21	आदिवासी समाज लोक व्यवहार परम्परा रूढ़ियॉ, रीति रिवाज तथा 21वीं शदी	षिखा त्रिपाठी	89-91
22	EXAMINATION OF HUMAN RELATIONSHIP IN SHASHI DESHPANDE' S *A MATTER OF TIME*	Dr Punam Pandey	92-95
23	TEACHING AND EXAMINATION FOR STUDENTS WITH VISUAL IMPAIRMENTS	Dr. Amita Tripathi	96-97
24	EFFECTS OF VIOLENCE AGAINST WOMEN ON THEIR MENTAL HEALTH	Dr. Sanjay Kumar Nayak	98-109
25	ASTROLOGICAL SURVEY OF OUR UNIVERSE	Dr. Shashi Kant Tripathi	110-113
26	NEED AND RELEVANCE OF INCLUSIVE EDUCATION	Dr. Reena Pandey	114-121
27	Enhanced AODV Protocol for Mobile Ad-hoc Networks	Er. Kumar Pradyot Dubey	122-126
28	DEVELOPMENT OF RURAL REGION THROUGH VILLAGE KNOWLEDGE CENTRES	Satish Mishra	127-134
29	ROLE OF COMMUNICATION IN THE IMPROVEMENT OF PERSONALITY	Dr: Rajula Albert	135-139
30	DIVERSITY AND TOLERATION: AN INVESTIGATION IN MODERN TIMES	Dr.Rakesh Roshan Singh Dr.Neelam Soni	140-144
31	Mobile- Commerce & New trends in M - Commerce Industry	Ms. Usha Chhillar	145-151

SAMANUBHUTI

International Journal Samanubhuti is an official journal of Jagadguru Rambhadracharya Handicapped University, the only university in India catering for the means of education of the persons with disability. The Journal is an international peer-reviewed, provides an excellent academic and professional forum to which the contributors around the world are invited to share their researches, views, book reviews, research article and last not the least experiences in all the areas of humanities, sciences, IT and business administration for publication. Authors are requested to send their manuscript typed double space in MS-Word 2007 in Times New Roman for English and Kruti dev 11 for hindi to samanubhutijrhu@gmail.com along with two copies of hard copy, should be sent to the Editor, Samanubhuti, J.R.H.University, Chitrakoot, Uttar Pradesh, India-210204.

Guidelines for paper submission

The first page of the paper should include the title of the paper/article/book review, the Name of the **author(s), institutional affiliation, email address(es).**
Title: Times New Roman, 14 pt, centered. **Name of the Author(s):** Times New Roman, 12 pt., centered, below the title. **Author(s) affiliation**, **email address(es):** Times New Roman, 10 pt, italic. **Abstract:** Abstracts should not be more than 300 words summarizing the main argument(s) and finding(s) in the paper Times New Roman, 10 pt **Keywords:** Times New Roman 12 pt., maximum 6 keywords. Paper should be between 2000 to 3000 words in length. The pages of the manuscript should be numbered in consecutive sequence. **Page numbering:** Position right, Times New Roman, 12 pt. All paper must be typed in Microsoft Word 2007 Subtitiles (sub headings) use Time New Roman , 12 pt., bold , left . Main text font Times New Roman, 12 pt should be single spaced and have 1 inch margins. **Tables & Figures:** Number tables/ figures should be consecutively as they appear in the text. Do not split tables/figures across two pages. If there is not enough space at the bottom of a page, continue your text and place the table at the top of the next page. Each table/figure must have a lable (titile) beginning with the table number and describing the contents. **APA style** of referencing should be used for reference. **Book:** Gupta A.K. (2006) Management Information system. New Delhi:S Chand & company Ltd. **Book with Two Authors:** Gupta, S.P and Gupta, Alka (2007). Open and Distacne Education: Allahabad :Sharda Pustak Bhavan, **Book with More than Two Authors :** Morgan, Clifford T.et.al.(1997) introduction to Psychology, NewDelhi. Tata McGraw- Hill Publishing Company Ltd. **Edited Book:** Mishra, Nihar Ranjan & Tripathi,Vivek Nath(2011). Technology Supported Teaching and Learning for the Visullay Impaired Children. In Dangwal, Kiran Lata(Eds), Educational Technology, New Delhi: A.P.H Publishing Corporation. **Article:** Pandey, vipin kumar & Pandey, Puman . Life and Art of Anita Desai, Samanubhuti, Chitrakoot, J.R.H. University, Page No-205-209. July-Dec 2012. **Report:** National Knowledge Commission, Report to the Nation, 2006. (2007) New Delhi: Govt of India. Wbe references: Ebenezer S.O Collier.(2007). The Enhancement of Teaching and Learning of the Science Secondary Schools Using Computer Assistedum Instruction . Retrieved from http://members.aol.com/escollier/computerassistedinstruction.html on 12/09/2009

Subscription Form

'*SAMANUBHUTI' is* an international peer reviewed research journal of JRH University' chitrakoot, U.P India.

Serial No…………………….
Subscription No……………..

Please accept my subscription for the 'Samanubhuti' bi-lingual, biannual international peer reviewed research Journal from ………………. to ....
Subscription Rates

Group	India	Outside India
Institutions/Corporates	Rs. 1200.00	20 US Dollar
Individuals/Academicians	Rs. 1000.00	17 US Dollar
Research Scholars & Retired Teachers	Rs. 800.00	14 US Dollar
Life Membership (For 5 years)		
(a) Individuals	Rs. 8000.00	140 US Dollar
(b) Institution	Rs. 10000.00	170 US Dollar

Name……………………………………………………………….....................................
Address…………...…………………………………
…………………………………………………………………………………………….
……………………………………………………………………………………………..
City/State......…............….……….....… Pin Code..……….............…..
Country..……......................... Phone No (Land line)……………….................…
PhoneNo (Mobile)………………….................….... Fax..……………...........……..
Email..……...…………...

I herewith enclose the payment of Rs/US Dollar in favour of finance Office (F.O) J.R.Handicapped University, Chitrakoot, U.P 210204 payable at Chitrakoot by damand Draft No………………………..dated………………………………
Please send the above subscription form carefully filled in and duly singed with demand draft or cash to be deposited in the university counter in the name of samanubhuti at the given address of university.

Date …………… Signature ………………..............

To

The Editor
"Samanubhuti"
' International Peer Reviewed Research Journal
J.R. Handicapped University
Chitrakoot -210204 India
Email: samanubhutijrhu@gmail.com
.

ABOUT THE UNIVERSITY

The strength of the Nation lies in its diversified human resource, Jagadguru Swami Rambhadracharya Ji believes that every human being is valued resource and should be provided enriched and valued opportunities so as to build required capacities and skills. **Thus this first University of its kind was established in the year 2001 at Chitrakoot, UP, India by Jagadguru Rambhadracharya Ji, to provide higher education and proper rehabilitation to persons with disabilities.** Though, there are various institutions and organizations to cater some of the needs of disabled persons, but the activities of such institutions/organizations were found to be very very limited. Swami Rambhadracharya Ji, who himself is a Visually Chanllenged persons, came forward with missionary zeal and opened the gate of opportunities for the disabled youth. The U.P Govt. has appointed him as life-long Chancellor of the University. Prof. Yogesh Chandra Dubey is the Vice-Chancellor of the University.

The University has given a platform to differently abled for getting education in their desired field at U.G and P.G level like Arts, Social Science, Social Work, Music, Fine Art, Computer Science, Education, Teacher preparation Programme (B.Ed, B.Ed (Special) - Visual Impairment & Hearing Impairment) M.Ed, M.A in Education, Disabilty studies, Rehabilitation Science Prosthotics & Orthotics, Audiology and so many job oriented courses. In short span of 16 years the University has transformed the lives of disabled persons and enabled them to share the responsibility of Nation building. Simultaneously, the outreach programmes of the University under the umbrella of Centre for Rehabilitation & Development have benefited the rural population especially the persons with disabilities. These programmes include awareness, early intervention, health care, Training & Employment and lastly their rehabilitation. Now, more than 1500 persons with disabilities have got placement in various field.

lekuHkkfrekUuu loHkknfoof tr%A
i';u cºee; lo l[k cU/kkr ieP;rAA
&txnx# Jh jkeHknkpk;%

सभी प्रकार के भेदों से रहित
समानुभूति से युक्त मनुष्य
(सर्वत्र) सब को ब्रह्ममय
देखता हुआ, सुखपूर्वक
बन्धन से मुक्त हो जाता है।

Kku J;%in lo] 'kk/k;KkRidk'krA
vrk foKju"B;k ;Kk·; fo'oHkr;AA

txnx# jkeHknkpk;l fodykx fo'ofo|ky; fp=dV ¼m0i0½ fiu&210204